शिक्षक दिवस पर विशेष...

गहराता मूल्य-संकट तथा वर्तमान शिक्षा प्रणाली

❊ डा.अजीत सिंह राणा, रोहतक

एक सभ्य व आदर्श समाज में मानवीय, नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों को सराहा तथा अपनाया जाता है। मूल्य मानवीय व्यवहार के ऐसे सिद्धान्त या मापदण्ड होते हैं जो श्रेष्ठ जीवन जीने के लिए मार्गदर्शन का कार्य करते हैं। जो व्यक्ति इन्हें अपनाते हैं वे अपने जीवन से सन्तुष्ट और प्रसन्न रहते हैं तथा समाज का हृदय भी जीत लेते हैं। इस प्रकार ये मूल्य व्यक्ति के चरित्र का निर्माण तथा विकास करते हैं। इनको अपनाने वाले लोग अन्य लोगों के लिए आदर्श पुरुष बन जाते हैं जैसे श्रीकृष्ण, श्रीराम, महात्मा बुद्ध, महात्मा गांधी, लाल बहादुर शास्त्री आदि।

इसके विपरीत जो लोग मूल्यों को जीवन में नहीं अपनाते वे विभिन्न प्रकार के भ्रष्ट कर्म करते ही रहते हैं तथा कर्म-भ्रष्ट, धर्म-भ्रष्ट व व्यवहार-भ्रष्ट समाज का निर्माण कर रहे होते हैं। ऐसे व्यक्तियों पर सदा भय, चिन्ता, शोक, रोग, सज़ा आदि के बादल मंडराते रहते हैं तथा दुखों के पहाड़ टूटते रहते हैं। वे सूखे कांटों की तरह होते हैं, खुद भी दुखी रहते हैं तथा दूसरों को भी सदा दुखी करते रहते हैं। ऐसे लोग मनुष्य-जीवन के लक्ष्य (देव पद प्राप्ति) से भटक जाते हैं तथा ऐसा जीवन जीना एक घाटे का सौदा बन जाता है।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली तथा मूल्य

मूल्यों के इतने ऊँचे महत्त्व को देखते हुए इनको शिक्षा प्रणाली में शामिल किया जाना चाहिए ताकि आदर्श समाज का निर्माण हो सके। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने के लिए भारत सरकार द्वारा गठित अनेक आयोगों तथा समितियों की सिफारिशें रही हैं कि कुछ मानवीय तथा वैश्विक मूल्य जैसे सत्य, शान्ति, प्रेम, सहयोग, न्याय आदि को शिक्षा प्रणाली में शामिल किया जाये लेकिन ऐसा नहीं हो सका या आवश्यकता की तुलना में नाममात्र ही हुआ।

कुछ वर्ष पूर्व यूनेस्को (UNESCO) ने जैक्वेश डलैर्स की अध्यक्षता में शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने के लिए गठित एक अन्तर्राष्ट्रीय आयोग की सिफारिशें चार स्तम्भों में विभाजित की – 1.जानने के लिए शिक्षा, 2.करने के लिए शिक्षा, 3.बनने के लिए शिक्षा, 4.साथ-साथ जीने की शिक्षा। इनमें से प्रथम स्तम्भ शैक्षणिक योग्यता को, दूसरा तकनीकी शिक्षा को, तीसरा स्तम्भ मूल्य शिक्षा को तथा चौथा स्तंभ आध्यात्मिक शिक्षा को प्रकट करते हैं। हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली प्रथम दो स्तम्भों पर खड़ी है। इसको सम्पूर्ण रूप देने के लिए स्कूल तथा कालेज की कक्षाओं के कोर्स के लगभग आधे विषय, मूल्य शिक्षा तथा आध्यात्मिक शिक्षा पर आधारित होने चाहिएँ। ऐसा नहीं किया जाने के कारण समाज को गहराते मूल्य संकट का सामना करना पड़ रहा है।

गहराता मूल्य संकट

बड़ी विडम्बना की बात है कि विश्व स्तर पर सूचना तथा संचार, सर्जरी, दवाइयाँ आदि अनेक क्षेत्रों में दिन दुगनी, रात चौगुनी उन्नति हुई है परन्तु इस प्रगति का लाभ विश्व के 40 प्रतिशत से कम लोगों तक ही पहुँचा है। लगभग 60 प्रतिशत लोग ज़रूरत के अनुसार भोजन-पानी, वस्त्र तथा मकान से आज भी वंचित हैं। मूल्यों की कमी के कारण ही अनेक सामाजिक बुराइयाँ भी तेज़ी से बढ़ती जा रही हैं। भ्रष्टाचार भारत में अतुलनीय गति से बढ़ रहा है, औसतन हर 29वें मिनट में बलात्कार, सामूहिक बलात्कार, हिंसात्मक दुर्घटनाएँ हो रही हैं। प्रकृति

का अत्यधिक दोहन, नारी का शोषण, हर व्यक्ति में भय, चिन्ता तथा असुरक्षा की भावना बढ़ती जा रही है।

बढ़ते आर्थिक अपराधों, सामाजिक बुराइयों व जुल्मों का एकमात्र कारण मूल्यों के प्रति अनभिज्ञता तथा जागरूकता का न होना है। मूल्यों के अभाव में व्यक्ति सही-गलत का निर्णय नहीं कर पाते। यदि निर्णय कर भी लेते हैं तो वे मूल्य-विहीन होने के कारण किसी छोटे-मोटे लालच के वश हो ठीक कार्य पर दृढ़ नहीं रह पाते हैं। ऐसे लोग अत्यधिक भौतिकवादी तथा बाह्य प्रभाव में आने के कारण अपनी आंतरिक शक्ति खो बैठते हैं तथा नकारात्मकता के शिकार हो जाते हैं। प्रश्न उठता है कि इन मूल्यों को लोगों में पुन: कैसे आरोपित तथा विकसित किया जाए?

मूल्यों के स्रोत

व्यक्तियों में मूल्यों को आरोपित तथा विकसित करने के लिए इनके स्रोतों को जानना अति आवश्यक बन जाता है। मूल्यों के प्रमुख स्रोत दो हैं – प्रथम है आत्मा, जो किसी संकल्प, बोल व कर्म के गलत या ठीक होने का निर्णय करती है। दूसरे हैं परमपिता परमात्मा, जो सर्व सकारात्मक मूल्यों के एकमात्र स्रोत हैं। उनसे बुद्धियोग लगाने से आत्मा में मूल्यों का समावेश होता जाता है। परमात्मा से बुद्धियोग लगाने को ही राजयोग (मेडिटेशन) कहा जाता है। इसके लिए अपने परम प्यारे पिता परमात्मा को परमधाम में दिव्य, चेतन महाज्योति के समान समझ कर अपने बुद्धि रूपी नेत्र से उन्हें देखना है तथा उनसे दिल की बातें करनी हैं। बुराइयों को छोड़ने तथा आत्मा के मूल गुणों, दिव्य गुणों व ईश्वरीय शक्तियों को धारण करने के संकल्प करते हुए इन्हें चेतन आत्मा में सुबह-शाम विशेष रूप से भरना है। इस दिव्य दृश्य को इमर्ज करने से व्यक्ति के संकल्पों व विचारों का शुद्धिकरण होता जाता है। आत्मा तमोप्रधान से सतोप्रधान, भ्रष्टाचारी से श्रेष्ठाचारी तथा पतित से पावन बनती जाती है। एक सिद्धांत है कि जैसा हम सोचते हैं वैसा हम बनते जाते हैं। यह विधि स्वयं परमात्मा शिव ने ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से बताई है। इस अभ्यास को बच्चे, विद्यार्थी, बड़े व बूढ़े सभी कर सकते हैं।

सुझाव

विद्यार्थी वर्ग अन्य वर्गों की तुलना में सबसे अधिक संवेदनशील, ग्रहणशील तथा उत्साहित होते हैं। इसलिए मूल्य शिक्षा तथा अध्यात्म के विषयों को छठी कक्षा से शिक्षा प्रणाली का अटूट अंग बना दिया जाना चाहिए ताकि आने वाले समय में सभ्य, आदर्श तथा श्रेष्ठ समाज की रचना हो सके। इसे व्यवहारिक रूप देने के लिए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से मदद ली जा सकती है। ❖

मेरे प्यारे भारत

ब्रह्माकुमार मदन मोहन, ओ.आर.सी., गुड़गाँव

सतयुग से कलियुग तक, बस तेरी ही कहानी है।
मेरे प्यारे भारत तेरी सच्ची यही निशानी है।।

सारा विश्व आज भी गाता, तेरी गौरव गाथा है।
विश्व-गुरु की पदवी का, सरताज तू ही कहलाता है।।

सीता, सावित्री, मीरा और लक्ष्मीबाई निराली थी।
तेरी ही माटी पर जन्मी, इनकी गज़ब कहानी थी।।

राम, कृष्ण की इस धरती पर, गाँधी की कुर्बानी थी।
आदर्शों से गढ़ी हुई वो मूरत बड़ी सुहानी थी।।

कला, संस्कृति का तूने विश्व को पाठ पढ़ाया है।
सभ्यता का रोज़ नया अध्याय भी दोहराया है।।

तूने ही माता का भी अद्भुत गौरव पाया है।
तेरी ही माटी में हमने जीवन सफल बनाया है।।

तेरी माटी में खुशबू है, कुर्बानी है वीरों की।
तेरी ही माटी में खानें सोने, चाँदी, हीरों की।।

कल्प-कल्प संगमयुग पर, भगवान स्वयं भी आये हैं।
तेरे ही आँचल में आकर, रत्न ज्ञान के लुटाए हैं।।

तेरी ही खातिर जीवन ये, हमने मन में ठानी है।
मेरे प्यारे भारत तेरी सच्ची यही निशानी है।।

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125 gyanamritpatrika@bkivv.org